अन्तरा-शब्दशक्ति

मोहे बिटिया ही दीजो

(काव्य संग्रह)

डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई

मोहे बिटिया ही दीजो

(काव्य संग्रह)

(कमल वीथिपुष्प- 11)

डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN-"978-93-5372-024-7"

अन्तरा शब्दशक्ति

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९
अणुडाक- antrashabdshakti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com
प्रथम संस्करण २०१८- डॉ भारती वर्मा बौड़ाई
मूल्य - १३५.०० रुपये
आवरण चित्र- उर्वशी बौड़ाई
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

Mohe Bitiya hi Dijo by Dr Bharti Verma Baudai

वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

मेरी बात

यह पुस्तक समर्पित है मेरी बेटी उर्वशी को जो एक बेटी, सखी, सहयात्री, मार्गदर्शक, परामर्शदाता होने के साथ एक लोकप्रिय अध्यापिका भी है।

उर्वशी बौड़ाई

अपने मन की बात कहूँ तो मेरे लिए इस संसार का सब से प्यारा और अनमोल रिश्ता माँ और बेटी का है। ये ऐसा रिश्ता है जो बिना कुछ कहे भी एक-दूसरे के सुख-दुख अनुभव कर लेता है। इस गंगा से पावन रिश्ते को मैंने बेटी बनकर बहुत सुंदरता से अपनी माँ के साथ भरपूर जिया और अब माँ बनकर अपनी बेटी के साथ उसी सुंदरता के साथ इस रिश्ते को जी रही हूँ। एक बेटी और माँ... इन दोनों रूपों में मैंने इस रिश्ते को इतनी मजबूती, गहनता और पावनता के साथ जिया और जी रही हूँ कि जब भी इस वंदन में मेरे नेत्र बंद होते हैं तो हृदय से एक ही आवाज निकलकर आतीहै...." मोहे बिटिया ही कीजो, मोहे बिटिया ही दीजो।"

बेटी माँ के सबसे करीब होतीहै। उसके सुख-दुख बिना कहे ही समझतीहै। एक-एक दिन उम्र की सीढ़ियों पर चढ़ते हुए कब वह बेटी के साथ-साथ सखी, मार्ग दर्शक, सहयात्री बन जाती है पता ही नहीं चलता। ये रिश्ता भी ऐसा है कि कितना भी इसे परिभाषित किया जाये, कितना भी इसके बारे में कहा-लिखा जाये... तब भी बहुत कुछ अनकहा, अनलिखा रह ही जाता है। वैसे भी शब्दों में मन का सब कुछ कह और लिख पाना कठिन और असंभव ही है।

अपनी माँ के साथ मेरा रिश्ता ऐसा ही रहा जैसा आज मेरा अपनी बेटी के साथ हैं.... जिसमें नोक-झोंक, छोटे-छोटे युद्ध भी हैं, रूठना-मनाना भी है, सहेलियों की चुहलभी है, साथ-साथ घूमना-फिरना भी है, एक-दूसरे के लिए परामर्श, मार्ग दर्शन भी है। मेरी माँ का मेरे और मेरी माँ के बिना काम नहीं चलता था, अब वही हाल मेरा और बेटी का है।

रिश्ते जीवन में मेरे लिए सबसे महत्व पूर्ण रहे हैं। हर रिश्ते को मैंने पूरी सार-संभाल के साथ सींच कर हरा-भरा रखा है। माँ बेटी का और पिता-पुत्री का... ये दोनों रिश्ते मेरे मन के बहुत पास के और गहरे रिश्ते हैं। अगर मैं कहूँ कि रिश्तों को गहनता से समझने, संभालने, जीने की समझ मुझे अपने माँ–पापा से मिली है, तो यह गलत नहीं होगा। यह अलग बात है कि रिश्तों में अतिसंवेदनशील

व्यक्ति बहुत कुछ सहना भी पड़ता है। रिश्तों रूपी पौधों की सर-संभाल ऐसे ही तो नहीं हो जाती!

बहुत सारी बातें करते हैं हम... प्रत्यक्षभी, कभी फोन पर, कभी व्हाट्सप के संदेशों में भी, उसके बाद भी बहुत कुछ बाकी रहता है तो लेखनी हाथ में आ जाती है, शब्द अपना काम करने लगते हैं। ऐसे में जब-जब जो लिखा गया बेटी के लिये... उसे आज एकत्रित कर इस संग्रह के रूप में उसके जन्मदिन पर सौंपते हुए हर्ष का अनुभव कर रही हूँ। जन्मदिन का मेरा यह उपहार उसे अच्छा लगेगा.... ऐसा मुझे विश्वास है।

07 मई 2019 **डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई**

अनुक्रमणिका

०१– परी

इच्छा थी
देखने की
कैसी होती है परी!
जब आई थी
गोदी में मेरी
नवजात बिटिया
तो जाना
ऐसी होती है
परी!
०७-०५-८८

०२– आजा....

आजा निंदिया रानी
मेरी कुक्की को
सुला जा..!

देखे कब से
रस्ता तेरा
इसकी दोनों अँखियाँ

ऐसा ना हो
तेरे कारण
ये जागे सारी रतियाँ

आजा निंदिया रानी
आँचल में सपने
ले के आजा..!!

सोये तो सपनों में
अनदेखे नगरों की
हर्षित हो सैर करेगी

अपने नए सवेरों की
पहचान कर एक
नई उड़ान भरेगी

आजा निंदिया रानी
नई उमंगे देने
जल्दी आजा

आजा निंदिया रानी
मेरी कुक्की को
सुला जा..!!!

०३– माँ और बेटी
——————-
माँ और बेटी
जब निकलती हैं
कहीं जाने के लिये
साथ-साथ,
तो अपने
तैयार होने से पहले
सँवारती है बेटी
माँ की साड़ी के प्लीट्स
जमाती है कंधे पर
नये ढंग से साड़ी का पल्लू….!

घूम-घूम कर
करती है मुआयना
ढूँढ कर पहनाती है
मैचिंग चूड़ियाँ
कि लगे
उसकी माँ
सबसे खूबसूरत….!!

बेटी के लिए
तो माँ ही होती है
दुनिया की सबसे
खूबसूरत, सुंदर स्त्री
जिसे ईश्वर ने
उसकी माँ बनाया है…!!!
१३-०६-१५
————————-

०४– बेटी दिवस पर

(पहले स्वयं अपने माता-पिता की बेटी बनी, फिर बेटी की माँ बनी....तो हर दिन बेटी का...।)

तू खिली जब मेरे आँगन में
खिल गई खुशियाँ चारों ओर
तू आई जब मेरी बाँहों में
मुस्काई बगिया,मच गया शोर
नया अर्थ मिला था जीवन का
हो मुदित,नाच रहा था मन-मोर।
२७-०९-१५

०५– चहको चिड़िया

यह जीवन जो मिला तुम्हें
सृष्टि का सर्वोत्तम उपहार
कल-आज के सत्कर्मों से
अपना कल तुम लो सँवार
हमारे घर-आँगन को तुमने
दी अपनी मोहक मुस्कान
इसी खुशी में नृत्य कर रहा
आकर देखो सारा संसार
आज तुम्हारी जीवन बगिया
महके सुरभित खुशियों से
चहको चिड़िया सी घर में
खिले स्वप्न देखे मन के।
०७-०५-१६

०६– विवाह पत्रिका में

बेटियाँ हैं माँ के मन की एक मधुर आवाज़
उतरें जब आँचल में उसके बज उठे हर साज़।

जाना माँ के बाद भाई ने बस बहन का प्यार,
अपने मन का सब कहने को बहन ही आधार।

माँ न हो बनती है बेटी अपने पिता की माँ
है कौन ऐसा दूसरा, जो दे पिता का साथ।

अपने पिया के घर जाने को सजी बेटी आज,
माँ, पिता, भाई आँसू किस विध रोकें आज।

जाओ बिटिया हँसी-खुशी, बसाओ निज सँसार
सुख-समृद्धि, प्रेम बने, नव गृहस्थी के आधार।
१४-०८-२०१६

०७–रक्षाबंधन

आज
रक्षाबंधन है
हर बार की तरह
इस बार हम देर नहीं करेंगे
नहा-धो तैयार होकर
मनाएँगे त्यौहार।
माँ ठीक नहीं है
उनके पास बैठेंगे
शाही पनीर भी तो बनाना है
मुझे आज
बैठ कर सोचेंगे
आज नया क्या करें
मेरे भाई
राखी रेशम की हो
या सूत की
बंधा उसमें दोनों का
प्रेम ही होता है
बचपन, कैशोर्य, युवावस्था
इनकी कितनी स्मृतियाँ हैं
हमारे पास
वो एनमेरी स्कूल में
पहले दिन तुम्हें छोड़ने जाना
और जाने से पहले
माँ का हमारी फोटो खींचना
याद है न तुम्हें
बाहुबली फिल्म घर में
मैं टी वी पर देख सकूँ
तो नया टी वी ही घर ले आना
सौभाग्यशाली होती है सब बहनें
जिनके तुम जैसे अच्छे भाई होते हैं
जो लड़ते भी हैं पर दिल में
प्यार का सागर समाए रहते हैं
इस बार अपने मन से
स्पेशल राखी लायी हूँ

चाहती हूँ इस बार
हर दिन स्पेशल बने
जिनकी यादों के धागे
हमें सारी उम्र जोड़ें रहें
तो मेरे प्यारे छोटे भाई
शुभ रक्षाबंधन।
१७-०८-२०१६
——————————————-

०८– विदा की घड़ी

अपने-अपने
अश्रु समेट कर
एक दूजे के गले लगी हैं
एक विदा करने वाली
और एक विदा
होने वाली है
कौन किसे कैसे समझाए
आन विदा की
खड़ी घड़ी है
सबके सम्मुख
हैं चुप दोनों
मौन बीच में
मुखर हुआ है
आज इसी ने
दोनों के मन को
बस धीरे से
चुपके से छुआ है
तुझ बिन कैसे रहूँगी बेटी
सोच मेरे
नैना भर आए
नहीं सोचना
तू कुछ बेटी
ये अश्रु तो खुशियों में आए।

०९– बेटी को विदा करते हुए

———————————————-

ओ री चिरैया !
ओ री चिरैया !
मेरी सोनचिरैया !
मेरे अंगना फिर आना रे.....!
वो सारी लोरियाँ जो
सुलाते तुमको सुनाई
वो सारी कहानियाँ सुन
जिन्हें तुम खिलखिलाई
उन्हें फिर मुझसे सुनने, मेरे अँगना फिर आना रे.... !
वो सब गुड्डे - गुड़िया
तुम संग जिनके खेली
वो छोटे - छोटे बर्तन
जिनसे खाना-खाना खेली
उनसे खेलने - बतियाने, मेरे अँगना फिर आना रे...... !
बाबुल की डाँट में तो
बस प्यार ही छिपा था
प्यार तुम्हारा बाबुल की
कड़ी हिम्मत बना था
उदास बाबुल को धीर बँधाने, मेरे अँगना फिर आना रे...... !
भाई तुम्हारा कब से
कोने में छिपा खड़ा है
आँसू न देख ले कोई
जबर्दस्ती हँस रहा है
उस नटखट को गुदगुदाने, मेरे अँगना फिर आना रे...... !
सुख-दुख के आँसू कितने
संग-संग हमने बहाए
हँसी और ठहाकों में
जाने कितने पल बिताए
वैसे ही मस्ती में खिलखिलाने, मेरे अँगना फिर आना रे......!
कितने गीत जिंदगी के
राहों में संग गुनगुनाए
कितनी बार रूठे सब
चाय पीकर मुस्कुराए
उन सब पलों को जीने संग. मेरे अँगना फिर आना रे.......!

वहाँ सासरे में भी तो
तुम्हें एक माँ मिलेगी
उनके प्यार से मेरी
तुम्हें कमी न खलेगी
कुछ भी हो लेकिन तुम, मुझे भूल न जाना रे....... !
मेरा क्या, मैं तेरे बिन
यादों में यूँ ही रह लूँगी
अपने मन की बता
अब मैं किससे कहूँगी
मेरी बिटिया, सहेली मेरी, मुझे आके बता जाना रे.....!
ओ री चिरैया !
मेरी सोन चिरैया !
ओ नन्ही गौरैया !
मेरे अँगना फिर आना रे.....!
०८-११-१६
————————————————-

१०– बेटियाँ
———————-
बेटियाँ ऐसी कथाएँ हैं
जो कभी खत्म नहीं होतीं,
बेटियाँ ऐसी दुआएँ हैं
जो कभी कम नही होतीं
बेटियाँ ऐसी हवाएँ है
जो सदा सँग नही रहतीं
बेटियाँ ऐसी सदाएँ हैं
जो सदा आवाज़ देती है।

ऐसी बेटी के जन्मदिन पर एक माँ कितनी भावुक होती है ये माँ ही जान सकती है।
०७-०५-१७
———————————————-

११– उर बसी

एक
हिरनी की तरह
कुलाँचे भरती
मचलती
इठलाती
नदी की तरह अनवरत
बह रही हो तुम
मेरे भीतर
मेरे साथ-साथ
नदी की तरह
तब से
जब बरसों पहले
नन्ही परी बन
उतरी थी मेरे आँगन
इच्छित वरदान की तरह
भर दिन अपनी कूक से
पूरे घर को सिर पर उठाए रहती
तो नाना ने प्यार से
नाम दिया कुक्की
नानी के उर बसी
तो बन गई उर्वशी
स्मृतियों की गठरी खोल
झाँकती हूँ जब
असंख्य खुशनुमा पल
निकल आते हैं बाहर
उनमें डूबते-उतराते हुए
आँखों के सम्मुख
तैरने लगते हैं अनेक चित्र
कुछ शब्दों में
तो कुछ कैद हैं
कैमरे से लिए चित्रों में
जिन्हें जब-तब बिखेर कर
बैठ जाते थे हम दोनों
देखते हुए बीच-बीच में चलते रहते

चाय-चिप्स-नमकीन के दौर
एक-एक चित्र की अंतर्कथा को
याद कर घंटों तक हँसते रहते थे
अब भी कभी-कभी
जब करना होता है
मन से मन का संवाद
तो बिखेर लेती हूं उन चित्रों को
मुस्कुराती रहती हूँ
देख-देख कर उन्हें
ये तब लिया था,.. और ये तब।
समय कितनी जल्दी
मुट्ठी से रेत की तरह फिसलता है
पता नहीं चलता
बहुत कुछ वही रहता है
पर पात्र बदलते रहते हैं
कभी अपने जन्मदिन पर
माँ-पिता की प्रतीक्षा में
प्राच्य शिखर के गेट को अपलक
निहारती थीं आँखें
ऑटो आकर रुकता
माँ-पापा उतरते
तो लगता था
सार्थक हुआ जन्मदिन
आज माँ की जगह मैं
मेरी जगह तुम
ये बदलते अहसास ही तो
बनते हैं साधन जीने के
नही तो कितने विवश होते
सोचना भी दुरूह लगता है
मेरी लाड़ली
जिस तरह
यहाँ तुम सबके
उर बसी
वैसे ही वहाँ भी
सबके उर बसो
सबको अपने में बसाए

अपनों के संग
अपने सपनों के
सर्वोच्च शिखर पर पहुँचो
दोनों परिवारों के
गर्व-गौरव
मान-सम्मान की ध्वजा को
फहराने वाली वाहक बनो
यही आशीर्वाद है आज मेरा।
०७-०५-१७
-------------------——

१२– मिलें...

मिलें आसमाँ की ऊँचाइयाँ
मिलें सागर की गहराइयाँ,
खिलें ख्वाबों की अमराइयाँ
गाए गीत संग परछाइयाँ।

दे रहे आवाज़ तेरे सपने तुझे
दे रहे हैं साथ तेरे अपने तुझे,
पंख खोल अपने उड़ान वास्ते
बुला रहा गगन मिलने वास्ते।
..........अशेष हार्दिक शुभकामनाएँ।

१३– वो चली आती है

———————————-

जब भी
होती हूँ उदास
वो चली आती है
सर्दियों की गुनगुनी धूप सी
सहलाने-दुलराने
हवा सी
घूमती है
मेरे इर्द-गिर्द
कानों में
मन पसंद गीत की तरह
गुनगुना कर
रिचार्ज करती है मुझे
हर दिन
नई सुबह की तरह
खटखटा कर
मेरे मन के द्वार।
बेटियाँ
ऐसी ही हवाएँ हैं
दूर होकर भी
रहती हैं बहुत पास।

मेरी उस राजकुमारी के लिए जन्मदिन पर अशेष शुभकामनाओं के साथ....जो जितनी अच्छी बेटी है, उससे कहीं ज्यादा मेरी ऐसी सखी है...जो बिना कुछ कहे ही जान जाती है कि मैं क्यासोच रही हूँ, दुखी हूँ, सुखी हूँ।
०७-०५-१७

१४– प्यार की चिट्ठी

(अब तो सचमुच दूरियों में प्यार की चिट्ठी बन गई है मेरी बेटी........)
जो
समझ लेती
बिना कहे वो सब
जो मैं
कह नहीं पाती
स्वयं अपने से भी
जो
बिना पूछे
धड़धड़ाते हुए
कर जाती है प्रवेश
मेरे अस्त-व्यस्त, पर
सबसे छिपा कर रखे
संवेदनाओं के संसार में
उसे
कैसे बताऊँ मैं
कि तेरे ससुराल
चले जाने के बाद
मैं कितना बिखर गई हूँ
अपने में कितना
सिमट गई हूँ।
०३-०७-१७

१५– शाश्वत आधार

मिलीं
शुभकामनाएँ
तुम सबकी
जन्मदिन
हुआ मेरा विशेष
गूँजा कानों में
ताज़गी देता
सुर-संगीत से सजा
एक प्यारा संदेस
संग होता है जब
अपना पूरा परिवार
होता है वही
जीने का
शक्तिशाली
शाश्वत आधार।

१६– बिन गुलाल

हैं
साथ
साजन
ससुराल
पहली होली
मैं बिन गुलाल
शर्म से हुई लाल।
२०१७

१७– पहली होली : ससुराल में

———————————————-

तेरी पहली होली
संग पिया परिवार के

खिलें रंगों के इंद्रधनुष
तेरे घर-आँगन-द्वार में

महके सुगंध पकवानों की
चतुर्दिक दिशाओं में

उड़ें खुशियों के गुलाल
जहाँ-जहाँ तक दृष्टि जाए

दिखें दूर-दूर तक चलती
मस्ती भरी हवाएँ फागुन की

रंगे तन-मन तेरा
गाढ़े प्रेम रंग में

लाए होली हर बार
नव उपहार आँचल में

हो सरल हर कठिन परिस्थिति
हमारा आशीर्वाद होली में।
२०१७

———————————————-

१८– पहला सावन : ससुराल में

पहली बार
आया सावन
तेरे जीवन में

बरस रही
छम छम बूँदें
तेरे आँगन में

दादी सास।
ससुर पिया सँग
खुशियाँ सावन में

छलक रहा
रिमझिम सावन
तेरे आँगन में

अब भीगो
झूमों मन भर
अब के सावन में

गौरा शिव
दें आशीर्वाद
सहेजो आँचल में।
२०१७

१९– पहली तीज : ससुराल में
—————————————————-
मन रही
तीज पहली
मंदिर प्राँगण में

सजी सँवरी
आई सुहागिनें
गाती मंगल गान

हिलमिल
नाचें गाएँ
देखो दे-दे ताल

अब के बरस
सावन ने दी
तुमको अनुपम सौगात

रहे सदा
ससुराल जनो का
सुखद सलोना साथ

खूब खिलाओ
घेवर सबको
पाओ आशीर्वाद

मने हमेशा
इसी तरह बस
तीज तुम्हारे आँगन में।
२०१७
२०– विवाह जयंती पर
—————————————
हुआ
एक वर्ष
गठबंधन का

लिखा
साथ मिल
नेह अनुबंध का

साथ
चले क़दम
प्रेम और विश्वास से

खुला
नया द्वार
स्वर्णिम भविष्य का

दीप
जल उठे
अनगिन प्रकाश के

नदी
पा गई पता
सागर के द्वार का

देखे
सिंदूरी संध्या
तारों की छाँव में

धरती
हुई मगन
साथ पा व्योम का

खिला
रूप तेरा
सजना के प्यार में

मिला
जब से पता
सजना के गाँव का

खिले
शतदल कमल
तेरे अँगना ससुराल में

मंगल

बना सूत्र
तेरे गलहार का

करना
अनवरत मनन
अपने स्वप्नों का

पढ़ना
पृष्ठ दूसरा
जीवन के अध्याय का।
०७-११-२०१७
——————————-

२१– मन ये कहे…!
—————————-

मिलता रहे
आशीष अपनों का
मन ये कहे।

जीवन बने
अक्षय निधि प्रेम
उल्लास मने।

मनाएँ आज
विवाह की जयंती
अपने साथ।
०७-११-१७
—————————

२२– विवाह जयंती पर

एक-दूजे का हाथ थाम
इन्द्रधनुषी रंग साथ लिए
एक नूतन विश्वास लिए
अपनों का साथ पाकर
लिखने चले थे साथ तुम
नेह का अनुबंध मिलकर
आज वो दिन फिर आया
शुभकामनाएँ संग लाया
खिलें हर रंग जीवन में
खिलें सब सुमन जीवन में
प्रकृति भी गुनगुनाए गीत
दे रही तुमको स्व आशीष।
०७-११-१७

२३– हमारी बेटियाँ

चढ़ रही है पर्वतों पर
उड़ रही आसमान में
देश का परचम उठाए
वो हमारी बेटियाँ हैं।

आँखों में हो नीर तब भी
मुस्करा कर देखती हैं
दो घरों की जान बनती
वो हमारी बेटियाँ हैं।

वेदना के गूँथ कर पल
उनमें अपना स्वर मिला कर
दूर करती जो अंधेरे
वो हमारी बेटियाँ हैं।

ये वेद गीता और पुराण
इनमें भरा है कितना ज्ञान
जिस मुस्कान पर सब निछावर
वो हमारी बेटियाँ हैं।

शीश पर थामे हिमालय
मन में लेकर गंगा धारा
पथ पे अपने बढ़ रही जो
वो हमारी बेटियाँ हैं।

अपने आँचल को संभाले
हौसलों के साथ बढ़ती
आसमाँ पर लेख लिखती
वो हमारी बेटियाँ हैं।

पत्थरों पर फूल खिलाए
दे उजाले खिलखिलाए
गुंजित करे चारों दिशाएँ
वो हमारी बेटियाँ हैं!
वो हमारी बेटियाँ हैं

२४– दरवाजा
____
बंद रखो दरवाजा
अपने घर का
कभी भी आ सकते हैं
शिकारी...
लगाए बैठे हैं घात कब से...
निकलना है बाहर
तो निकलो
अपनी पूरी तैयारी से,
झपट पड़ा कोई
तो सोचना भी मत
कोई आएगा बचाने...
तमाशबीनों का झुंड
देखेगा बस!
साम, दाम, दंड, भेद
तैयार रखना अपने...
निपटना स्वयं ही है
यही मार्ग है...
दरवाजा बंद रहे या खुला
फ़र्क इससे नहीं पड़ता...
फ़र्क पड़ता है कि
तुम्हारी तैयारी
कितनी है अपने लिए लड़ने की....
क्या तुम तैयार हो
दरवाजा खुला रखने के लिए.....???
३०-०४-१८
२५– मोती : आशीर्वाद का
____
आशीर्वाद के
मोतियों से भरी
मेरी यह मुट्ठी
आज जब मिलोगी
तो बिखेर दूँगी
तुम पर....!

रख लेना
सहेज कर
कल जब
न रहूँ मैं तो
इसमें से कोई
एक मोती आशीर्वाद का
निकाल कर देखना
अनुभव करना मुझे
अपने पास
मैं यहीं हूँ
तेरे पास......!!!!!
०७-०५-१८
___________________-

२६– बंद खिड़की

बंद खिड़की के
एक तरफ तुम हो
तुम्हारे अपने कामों का
जिम्मदारियों का
लगा हुआ अंबार
और कुछ अपने
आलस-थकान में
उलखे मन द्वारा
इनमें तारतम्य
न बैठा पाने का योग!
तो ठीक
इस बंद खिड़की के
दूसरी ओर
कुछ रास्ते हैं
कुछ अधूरे सपने
कुछ अधूरे काम
जिन पर
पड़ गई है धूल...

जब तक
खोलोगी नहीं खिड़की
देखोगी नहीं उस पार
तब तक
उन रास्तों पर
चलोगी कैसे?
उन सपनों को
जियोगी कैसे?
उन कामों को करोगी कैसे....?

सुनो!
दे रहें हैं आवाज
रास्ते तुम्हें कब से...
कब तक
अनसुना करती रहोगी

उनकी आवाज को?
ऐसा न हो
वे भूल कर तुम्हें
बुलाना ही बंद कर दें....

इससे पहले ही
खोल लो खिड़की
जो बंद कर रखी है
आने दो
सपनों की महक लिए
खुली हवा को.....
वो ही तो चलेगी संग
सपनों को जीने की
यात्रा में साथ-साथ
जो आरंभ होगी
खिड़की खुलने के बाद.....!!
०७-०५-१८

२७– रिश्तों की डोर
(मुद्रिका समारोह जयंती पर)
____

बंधी थी रिश्तों की डोर
जिस दिन
दो मन
दो परिवार भी
बँधे थे एक डोर से
उस दिन से
और आज तक
न जाने कितने
हर्ष और उल्लास के
पल जिये जा रहें हैं,
स्मृतियों के
नगर में ठिठके कि
कुछ पल को विद्युत सी कौंधी
मन-मेघों मध्य
और याद आया
मुद्रिका समारोह के
दो वर्ष कितनी
त्वरित गति से बीत गये!
१०-०७-२०१८
________________-

२८– मेरी कविता
——————————-

जो
स्वयं
कविता बन उतरी हो।
घर के आँगन में
खिलखिलाने
तारों की तरह
झिलमिलाने
त्योहारों पर अपने
हाथों से रंगोली पूरने
जो उठाये रखती हो
पूरे घर को अपनी
नटखट शैतानियों से
आसमान में
जो बनी खेल- खेल में
कभी डॉक्टर
अध्यापिका तो
कभी माँ
जो देखती है सपने
चिड़िया सी
खुले गगन में उड़ने के
पर टिकाये रखती है
पैर मजबूती से
जमीन पर,
अपनी खनकती आवाज से
नयी-नयी स्वर-लहरियाँ
रचती रहती है जो
जो संभाल लेती है
माँ-पिता को बीमारी में
बन कर उनकी माँ
करने लगती है
सार-संभाल बिलकुल
माँ की तरह
जो आवश्यकता पर
भाई को संभाल लेती है

बहन के आवरण में
लिपटी माँ का रूप लेकर,
ऐसी मनचढ़ी, मनबसी, हृदय की अंश
अपनी बेटी पर कैसे लिखूँ मैं
कोई कविता.....
कभी मैंने उसको लिखा था,
आज वो मुझको
लिख रही रही है
हमारे दिये रंगों में
अपने कुछ और नये रंग भरती
नया चित्र रचती
मुझे दिख रही है
नयी राहों को खोज
उन पर अपने
पदचिह्न छोड़ती
नवीन संभावनाओं के
द्वार खोल रही है
मेरी बेटी नये रंगों में ढल रही है.......!
२०१८

२९– वरदान
____

गंगा सी पावन है बेटी
तीर्थ का वरदान बेटी,
मिलती बड़े सौभाग्य से
दो कुलों की प्राण बेटी!

अंबर धरा तो जीत डाले
समुद्र पर चरण धरा है,
अब नहीं है कुछ असंभव
लो शान से कहती है बेटी!

दूरियों में चिट्ठी प्यार की
पास रह गुंजन चिड़ी की
घर रहे रौनक से भरा जब
सुमन सी सुरभित हो बेटी!

अब नहीं बेटों से कुछ कम
सिद्ध इसने है कर दिखाया
शक्ति बन कर बढ़ रही है
माता-पिता का सम्मान बेटी!

३०– बिटिया

मिली
जिस दिन
तू बिटिया मेरी
माँ बन कर तेरी
मैं सम्पूर्ण हुई,
पाया वो सुख
सम्मुख जिसके हैं सभी सुख व्यर्थ...!
हँसती है जब तू
महक उठती है बगिया मेरी
तेरी हँसी से झरते सुमनों से,
पर रोती जब
होता है दो टूक हृदय मेरा...!!
पढ़ा-लिखा कर,
जीवन रक्षा के
गुर सिखला कर,
संस्कारों से परिपूर्ण कर
तुझे इतना शक्ति सम्पन्न
और विवेकशील बनाऊँगी
कि तुम स्वयं अपने निर्णय ले सको...!!!
तेरे अधरों पर खिली
ये कोमल हँसी
सदा यूँ ही खिली रहे
इसके लिए बहुत जरूरी है
समय की सही पहचान करना
ओ मेरी रानी बिटिया....!!!!
२०१८

३१– प्रेम राग बेटियाँ

बेटियाँ आराधना हैं
बेटियाँ सम्भावना हैं
बेटियाँ वीरांगना हैं
बेटियाँ नीराजना हैं त
बेटियाँ हैं मान अपना
बेटियाँ तो अभिमान हैं।

दो कुलों का गर्व बन
गौरव उन्हें देती सदा
स्वयं को भी निखारे
कुछ ऐसी इनकी अदा
बेटियाँ बिन घर सूना
बेटियाँ तो मुसकान हैं।

प्रेम का राग बन कर
सीने में है आग रखती
सपन देखती गगन के
धरा से संबंध रखती
सदा मगन चहचहाए
बेटियाँ तो अरमान हैं।

३२– बेटियाँ

••••
है
हवा
बेटियाँ
बहती जो
घर आँगन
रखती संभाल
नैहर ससुराल।
••••
है
सब
निर्जन
अरण्य सा
बेटी विहीन
घर हर्ष हीन
चुभे कंटक हिय।
••••
लो
लेख
अंकित
हुए नभ
वसुधा पर
थाम ली कमान
बेटी भरती उड़ान ।
••••
ये
लेती
विविध
रूप जब
चुनती सारे
शूल जीवन के।
••••
जो
मिले
सहेजें

मन भर
आएँगी जब
बेटियाँ आँगन
बरसेगा सावन।

३३– नए रंग: भैया दूज के
(भाव बेटी के : शब्द मेरे)
———————————————-
कल भैया दूज है
भाई! जल्दी आना
विवाह के नये रिश्ते में बंधी हूँ न,
तो नहीं रहा पहले जैसा कुछ भी
वो लड़ना-झगड़ना
मनचाहे उपहार के लिए तंग करना
फिल्म दिखाने की
गुप-चुप गोल गप्पे खाने की योजना बनाना
कितनी ही तो बातें हैं जो मन में आती हैं
तो रुकने का नाम नहीं लेतीं,
और ये आँसू!
बिन बुलाये अतिथि की तरह
मेरी काजल लगी आँखों में डेरा जमा लेते हैं...!
बहुत सी बातें कहनी हैं तुमसे
प्यार से एक लप्पू भी देना है
तुम्हारे गाल पर,
बताया मुझे माँ ने
नहीं खाते काम के चक्कर में ढंग से खाना भी...!!
पर,
कल जब तुम आओगे घर
न कुछ कह पाऊँगी
न लप्पू दे पाऊँगी
अब बहू बन गयी हूँ न
इसलिए सारी चंचलता
नए रंग में ढल गई है,
सो थोड़ा मुस्कुराऊँगी
सिर पर आँचल लिए टीका करूँगी,
नारियल देकर मिठाई खिलाऊँगी,
और भी कुछ
बनाये हुए पकवान भी,
थोड़ी-बहुत बातें भी करूँगी...!!!
बस,
वो जो मन में जमा किया

इतने दिन से कहने को
अपनी उस चंचलता के साथ
नहीं कह पाऊँगी...!!!!
तो मेरे भाई!
भले ही न जी पायें
वो पहले वाले दिन
उसी मस्ती के साथ,
याद करते हुए मन ही मन उन्हें,
इन नए रंगों में खिलखिलायेंगे
मन की कहने को
वहाट्सएप मैसेंजर पर आयेंगे,
जल्दी आना भाई!
नये रंगों के बीच
थोड़े-थोड़े संकोच से भैया दूज मनायेंगे...!
०९-११-१८

३४– सामर्थ्य

———————-

हो
लाड़ली में सामर्थ्य इतना
उड़े ऊँची उड़ान
अपने जिये सपनों के लिए
तो चलें उसके साथ बिना किसी शर्त के
ऊबड़-खाबड़,पथरीले रास्तों पर भी
करे अन्याय का सामना स्वयं
दे दोषियों को सज़ा बीच चौराहे पर
तो बनें उसकी शक्ति
निर्विरोध समाज के सम्मुख
हो शिक्षित स्वयं
कि जगाये अलख शिक्षा की
अज्ञान के अंधेरे में
तो दें शिक्षा
जो वह चाहे करने दें
जो वह करना चाहे
न बनें बाधक
पड़ोसियों, सम्बन्धियों समाज के डर से
रखने दें नई लीक
कल जिस पर चल कर पीछे-पीछे
उसके विरोधियों को
अपना भविष्य गढ़ना है
तो भरें सामर्थ्य लाड़लियों में अपनी
बना सकें सामर्थ्यवान हर जन को।

—————————-

३५– वसीयत बेटियों की

————————————-

बेटियों ने
लिख ली है
वसीयत अपनी
और कर दिए हैं
उस पर अपने हस्ताक्षर,
शक्तिपुंज बनती हम
इस धरा पर
निर्विघ्न, निर्बाध
निर्भय होकर
आज भी और आगे भी
रचती रहेंगी अध्याय
नये-नये अपने
सम्मान, स्वाभिमान के
जो पदचिह्न बन
आलोकपुंज होंगे
सर्वजन हिताय।
२३-०९-१८

———————————

३६– नेह बंधन

———————-

जब से बँधा नेह बंधन
पूर्ण हो गई मैं!
पाकर तेरा मधुर स्पर्श
तृप्त हो गई मैं!
लिए गोद में घूमा करती
रात-रात भर मैं!
सोती तेरी नींद जागती
तेरे साथ ही मैं!
कितने गीत कहानी सुन
सोया करती थी तू
अब वो बातें हुई कहानी
सोचा करती हूँ मैं!
कब स्कूल गई अपने और
कॉलेज हुआ शुरू
लगी पढ़ाने अब खुद भी
लगे जादू सा कोई
कब हो गई बड़ी इतनी
मेरी छोटी सी बेटी
आज संभाले अपने घर को
मुझसे दूर बहुत बैठी
सुन लेती है बिना कहे ही
मेरे मन की बात
दुःख की छाया हो मुझ पर
हो जाती स्वयं उदास
माँ बन जाती छोटी बच्ची
बेटी बन जाती है माँ
एक-दूजे के हृदय में बसती
सदा बेटी और माँ
दूरियाँ भी सिमटती जाएँ
जब मिलती बेटी-माँ।

———————————

३७– फेसबुक के रंग

माँ-बेटी का
रिश्ता हमारा
ईश्वर का दिया
अनुपम वरदान था
जो अपनी आभा से
जीवन में हमारे लहलहा रहा है
शीश उठाए
हिमालय सा शान से
उसमें कुछ और
इन्द्रधनुषी आभा देने
फ़ेसबुक भी चला आया
कुछ रंग लिए अपने
देने हमें
तो चलें
हम माँ-बेटी
फ़ेसबुक के दिए रंगों से
रचने नया चित्र
साथ-साथ
खिलते रहें ये रंग
जीवन में हमारे........!!!!!!!

३८– विश्व बालिका दिवस पर
———————————————-

बेटी हमारी
बनी है प्राण वायु
मेरी दुलारी।

रचे रंगोली
घर अँगना मेरे
है हमजोली।

आज बेटियाँ
नहीं किसी से कम
छूटी कमियाँ।
......हर बेटी खिलेगी,इतिहास रचेगी।
—————————————————-

३९– बेटियाँ हैं ऋग्वेद

———————————-

•••

खोल रही अपने पंखों को
उड़ने को हैं तैयार बेटियाँ,
बूँद बूँद लेकर आँचल में
उजाला देने हैं तैयार बेटियाँ।

•••

बिखरायें चहूँ ओर हँसी
सभी मिटायें मतभेद,
भारत का अभिमान बनी
ये बेटियाँ हैं ऋग्वेद।

———————————————

४०– मायका
(भाव बेटी के : शब्द मेरे)
————————————————-
मायका
कहते ही कितनी
शांति अनुभव होती है
ये सही अर्थों में
पता चलता है
विवाह के बाद
बचपन से लेकर
बड़े होने और
विवाह होने से
पहले तक
बिना किसी चिंता के
कैसे बीतते हैं दिन
पता ही नही चलता
माँ की सीख
पिता का अनुशासन और
भाई के साथ होने वाले
वे संगीन झगड़े
तब लगता है
दुनिया बस यही तक है
पर विवाह होते ही
एक नया संसार
मिलता है
नया घर
नए लोग
नया परिवेश
तब माँ की सीख
और पिता का अनुशासन
नए घर, नए लोग, नए परिवेश
नई जिम्मेदारियों से
जुड़ने के लिए
कब किसी भी लड़की की
कितनी बड़ी
हिम्मत बन जाता है

ये उसे विवाह के बाद
समझ आता है
छोटा भाई भी कब
बड़ा भाई बन जाता है
पता ही नही चलता
और इन्हीं के कारण
ससुराल भी
मायका बन जाता है।

४१– करवाचौथ पर
———————————-

देना अर्ध्य
धरा के चाँद
अपने साजन संग
नभ के चाँद को,
देखना
छलनी से
पहले चाँद
फिर साजन को
माँगना अटल सुहाग
और घर के लिए खुशियाँ
इस तरह मनाना
करवाचौथ अपने पिया संग
परिवार के संग……….!!!!!

———————————————-

४२– परछाई

——————–

मैं
बचपन से डोला करती
माँ-पापा के संग-सँग
बन कर उनकी परछाई
उनकी हिम्मत से जो पाया
बना वही पाथेय अमोल
मेरी जीवन भर की यही कमाई
संघर्षों के सम्मुख तनना सीखा
संघर्ष बिना है जीवन फीका
वही समझ पायेगा इसको
जिसने संघर्षों में जान लगाई
आज
बिना उनके सोच रही हूँ
बिना प्रेरणा के जीवन
जीना कैसे पूछ रही हूँ
लगता ऐसे जैसे अब तो
मेरा साथ न देगी मेरी परछाई
नभ में चमकते तारों में से
जैसे कोई मुझे बताता
चक्र सदा ही चलता रहता
बस कुछ चित्र बदल जाते है
माँ बन कर क्या समझ न पाई
अब तेरी बेटी डोल रही सँग
बन कर तेरी ही परछाई।

————————————————–

४३– प्रस्ताव दिवस पर : बेटी के लिए

ये
पीले
गुलाब
मित्रता की
असाधारण
धरोहर हेतु
बने अक्षय सेतु।
•••••••••
आ
करें
प्रतिज्ञा
ये मित्रता
माँ बेटी मध्य
बढ़े दिनोंदिन
बीतें यूँ पलछिन।

४४– सर्वोत्तम उपहार

(जन्मदिन पर बेटी के सर्वोत्तम उपहार ने पापा से मिलने वाले उपहार की याद दिलायी)

माँ आप एक प्यार भरा बंधन हो ,
केवल एक शब्द या रिश्ता नहीं ,
आप मेरी हर समस्या का हल हो ,
ख़ुशियों में मेरे साथ ख़ुश होते हो
दुख में मेरे धीरज बँधाते हो
ग़ुस्से में शांत रहना सिखाते हो
और परेशानी में हिम्मत दिलाते हो
कैसे ये सब कर जाते हो
इसीलिए माँ कहलाते हो
आपको जन्मदिन की ढेर सारी शुभकामनाएँ।
.......कौन सी माँ न रीझेगी ऐसे उपहार पर भला....!!!

४५– मेरी वैलेंटाइन

कहते हैं कि बेटियाँ माँ की परछाई होती है। एक-दूसरे की प्राण होती हैं। एक जन्म देकर माँ बनती है तो दूसरी जन्म पाकर बेटी। दोनों एक-दूसरे को पाकर पूर्ण होती हैं, इसी से एक-दूसरे की पूरक बनजाती है। बिना कहे समझ जाती हैं दिल की बात, आवाज़ से ही जान जाती हैं कि दुःख की बदरी सी मन-प्राणों पर छाई है या कोई ख़ुशी छलकी जा रही है। इसका अनुभव अपनी माँ की बेटी बन करखूब बटोरा, और अब अपनी बेटी की माँ बन कर फिर वही सब जीने का अवसर मिला है। ओस की निर्मल बूँद सी होती हैं बेटियाँ... जो अपने निश्छल प्यार की शीतलता से जीवन में खुशियों का अंबारलगाए रखती हैं, घर को अपनी खिलखिलाहट और चहचहाट से गुँजायमान रखती हैं कि उदासी पसरने ही नहीं पाती। कभी गुनगुनाती हैं, कभी कुछ पकाती हैं, कभी सब उलट-पुलट कर घर को सजाने-सँवारने लगती हैं, तो कभी पूरे घर को आसमान पर उठाए फिरती हैं। अतिथि आ जाए तो आतिथ्य की जिम्मेदारी से मुक्त कर स्वयं लग जाती है।
और यही बेटी जब दुल्हन बन, सात फेरे लेकर अपने ससुराल चली जाती है तो जैसे घर की सारी रौनक, चहल-पहल अपने साथ ही ले जाती है। पर ये रिश्ता माँ-बेटी का ऐसा है कि इसमें दूरियाँ कोईमायने नहीं रखती। बिना कहे, बिना आए एक-दूसरे को अनुभव करती रहती है, एक-दूसरे को अपने हृदय में जीते हुए एक-दूसरे का साहस बनी रहती हैं।
बस इसीलिए मैं अपनी बेटी को अपने एकदम निकट पाती हूँ और सोच की गहराइयों में डूब कर अपनी बेटी को ही "अपना वैलेंटाइन" पाती हूँ।

४६– मातृ दिवस पर : बेटी के नाम पत्र

————————————————————-

प्यारी बेटी उर्वशी

आज तुमसे बहुत सारी बातें करने का मन है। हो भी क्यों न....माँ-बेटी का रिश्ता है ही ऐस ा...जहाँ कितना भी कहो, कितना भी सुनो...फिर भी बहुत कुछ अनकहा-अनसुना रह जाता है ।
मैं अपने जीवन के उस स्वर्णिम पल को सर्वश्रेष्ठ मानती हूँ जब तुम्हें जन्म देकर मैंने तुम्हारी माँ होने का गौरवपूर्ण पद प्राप्त किया। जन्म से लेकर तुम्हें बड़ा करने तक, शिक्षा-दीक्षा, विवाह से लेकरविदाई तक के हर उस सुख-दुख, त्याग का अनुभव किया जिसे मेरी माँ ने मेरे साथ अनुभ व किया होगा। हर माँ की तरह मैंने भी तुम्हारे बचपन के साथ अपना बचपन जिया। तुम्हारे सप नों में अपनेसपने मिला कर तुम्हारे सपनों को जिया। मैं जो नहीं कर सकी वो तुमने किया। इसमें छिपी माँ की प्रसन्नता शब्दों में तो वर्णित नहीं ही हो सकती, केवल अनुभव की जा सकती है।
मैंने अपने जीवन में वही किया जो मुझे सही लगा। अपने लिए किसी भी निर्णय पर कभी पश्चात ाप नहीं हुआ। मेरे आत्मविश्वास ने ऐसा करने में मेरी सहायता की। यह आत्मविश्वास अपने मा ता-पिता से मिले संस्कारों पर चलते हुए तथा जीवन में मिलने वाले कड़वे-मीठे अनुभवों से मिल ा। समयानुसार उसमें कुछ नया जोड़ते हुए हमने तुम्हारा लालन-पालन किया और प्रयत्न किय ा कि तुम वोआत्मविश्वास प्राप्त कर सको जो जीवन में आने वाली कठिनाइयों के समय सही निर्णय लेने में सहायक बने। हम अपने प्रयत्न में कहाँ तक सफल हुए हैं....यह तो आने वाला स मय ही बताएगा।
सही पर अडिग रहना और गलत होने पर क्षमा माँगना... ये दो बातें जीवन में बहुत महत्वपूर्ण हैं । जीवन में ऐसा समय भी आएगा जब तुम्हें कठिन फैसले लेने पड़ेंगे। तब अपना आत्मविश्वास बनाएरखना। अच्छी और बुरी दोनों स्तिथियों में अपने को संभालते हुए अपनों को संभाल कर र खना।
जीवन में सदा अपने मन का नहीं होता। हमें सबके मनों को समझ कर, उनका ध्यान रखते हुए चलना होता है। ऐसा करते हुए जो आत्मसंतुष्टि, सुख और प्रसन्नता मिलती है...उसे तुमने स्वयं भीअनुभव किया होगा।
जीवन का एक ही मूल मंत्र है....जो सही लगे वही करो, अपनी राह स्वयं चुनो, अपने सपने स्व यं बुनो, पर उस राह पर अपने सपनों को पूरा करने के लिए अपनों को साथ लेकर चलो। अपनों का साथसपनों को पूरा करने की यात्रा में आशीर्वाद बन कर साथ चलता है।
जीवन में कोई भी संपूर्ण नहीं होता। एक-दूसरे की कमियों को स्वीकार करते हुए अपने जीवनस ाथी के साथ अपने लक्ष्य, सपनों को पूरा करने के लिए सकारात्मक सोच रखते हुए ईमानदारी के साथजीवन जीना। अपने नाना की तरह कठिन परिश्रम को जीवन का अंग बनाना। तब देख ना जीवन कितना सुंदर, सुंदरतम होता जाएगा और कितने इंद्रधनुष खुशियों के चमकते हुए दि खाई देंगे।

तुम्हारा आत्मविश्वास और समझदारी देख कर मेरा विश्वास मजबूत हो चला है कि तुम सही राह पर चलते हुए सही निर्णय लेने में समर्थ बनोगी और सबकी आँख का तारा रहोगी।
मुझे गर्व है कि तुम मेरी बेटी हो और मैं तुम्हारी माँ हूँ।
तुम्हारी मम्मी

४७– खुशियों की वर्षा

———————————————-

समय कितनी शीघ्रता से रेत की तरह हाथ से निकलता जाता है.... यह तब समझ आता है जब अपने बच्चे घर से दूर होकर अपने कार्य और घर-संसार में व्यस्त हो जाते हैं। जब आते हैं तो मिलने कीप्रसन्नता से अधिक आकर जाने का दु:ख मन को पहले घेरने लगता है। ये मिलने के छोटे-छोटे पल मन की शुष्क भूमि को वर्षा की छोटी-छोटी बूँदों की तरह बिखर उर्वर बना जाते हैं। तभी तो अपनेत्योहारों, जन्मदिनों का महत्व अनुभव होता है जब हम इनके नाम पर अपने व्यस्त जीवन से मिलने के कुछ पल चुरा कर, उन्हें साथ जीने का सुख जीते हैं और अपने संसार को खुशियों से भराअनुभव करते रहते हैं।

आज तुम्हारे जन्मदिन पर मैं स्मृति के नगर के गलियारों में घूम रही हूँ। तुम्हारे जन्म से लेकर आज तक के सारे चित्र एक-एक कर आँखों के सामने आते जा रहे हैं।यह तो और भी अच्छा है कि हमारेपास चित्रों का इतना संग्रह है जो हमें हमारी स्मृतियों से कभी दूर नहीं होने देगा।

जन्मदिन पर यही कामना और यही आशीर्वाद......जो भी तुम्हारे सपने हों.....वे सब सच हो जाएँ।

हर बार की तरह शब्दों से गूँथा काव्यमय उपहार तुम्हारे लिए........... !!!

———————————————————

४८– ठंडी हवा का झोंका
———————————————-

बेटे-बेटियाँ न हों तो, खुशियाँ चुपचाप छू कर धीरे से यूँ पास से निकल जाती हैं कि वे कब आयीं और कब गयीं... पता ही नहीं चल पाता। इन्हें जीने के लिए, अनुभव करने के लिए भी व्यस्तता से कुछपल चुराने पड़ते हैं, हृदय की गहराइयों में उतरना पड़ता है, प्रतीक्षा की घड़ियों को भी गिनना पड़ता है...तब कहीं जाकर चुपके से खुशियाँ आपके आँगन उतरती हैं...जब बेटे-बेटी क ी मधुर आवाज़ फोनपर सुनाई देती है कि हम आ रहे हैं।
बेटा तो अपने काम के चलते आ नहीं पाया, पर फोन पर बात करके न आ पाने की कमी को कु छ हद तक कम करने की जुगत लगाई। बेटी आज की गर्मी में ठंडी हवा के सुखद झोंके की तर ह आई।कुछ पल साथ बिताये। यही पल तो एक-दूसरे को यह अहसास दिलाते हैं कि हम एक-दूसरे के लिए कितने महत्वपूर्ण हैं।
अपने पापा के जन्मदिन को आज ख़ास बनाने के लिए हमारे बच्चों....तुम्हें बहुत-बहुत आशीर्वा द हमारी ओर से।
आज के सुखद पल....जो चित्रों में सँजोना हम कभी नहीं भूलते।
————————————————————————

४९– सुखद संयोग

———————————-

कल ७-१०-१७ को दो सुखद,प्यारे संयोग.....
कल मेरी माँ का जन्मदिन था और बेटी की प्रथम विवाह-जयंती भी।
मेरे मम्मी-पापा की ये उत्कट इच्छा थी कि मेरी बेटी का कन्यादान वे दोनों अपने हाथों करेंगे और इसके लिए उन्होंने मुझसे वचन भी ले लिया था। पर शायद ईश्वर को यह स्वीकार नहीं हुआ और उनदोनों को पौने दो महीने के अंतराल में अपनी शरण में ले गया।
और उसी ईश्वर की कृपा से बेटी के विवाह की तिथि नानी के जन्मदिन वाली निश्चित हुई। मन से की हुई इच्छा को ईश्वर भी तो पूरा करना चाहते हैं। हमारे पंडित जी दामोदर जी के सुझाव से हमनेनाना-नानी और दादा-दादी की मिला कर एक फ़ोटो बनवाई, जिसे हमने विवाह के हर माँगलिक अवसर पर रखा।इस तरह वे मेरी बेटी के विवाह में सम्मिलित होकर साक्षी बने।
आज जब माँ का जन्मदिन और विवाह-जयंती एक साथ आयी तो लगा माँ-पापा उस पर के संसार से अपनी नातिन के साथ अपना जन्मदिन और विवाह जयंती एक साथ मनते देख आह्लादित तो होही रहे होंगे साथ ही अपनी नातिन और जामाता पर जी भर आशीर्वाद भी बरसाया होगा।

————————————————————-

५०– अटूट बंधन : प्रेम का

————————————-

अटूट बंधन...प्रेम का....
बेटी के विवाह में बान (हलद बान) के समय
घर की दीवार पर बेटी के हाथों के शुभ चिन्ह
जब भी देखती हूँ प्रसन्नता और बिछोह की मिश्रित भावना के सागर में डूब जाती हूँ।

————————————————————

५१– बेटियों की माँ

बेटियों की माँ बहुत सौभाग्यशाली होती हैं। पहले माँ जन्म देकर बेटियों को बड़ा करती हैं, उन्हें सँवारती हैं। देखते ही देखते कब वे सयानी हो जाती हैं कि पता ही नहीं चलता और वे आपको सँभालने-सँवारने लगती हैं कि फिर उनके बिना आपका काम ही नहीं चलता। कहीं जाना है तो वे साड़ी चुनेंगी, मैचिंग चूड़ियाँ निकालेंगी, ज्वैलरी ढूँढ़ेंगी,साड़ी की प्लीट्स से लेकर पल्लू को ज मा कर कई एंगल सेदेख कर तब निश्चिन्त होंगी कि उनकी माँ सबसे सुंदर लग रही है। और जब ये कहीं गईं हों, और आपको कहीं जाना हो, तो सबसे बड़ी मुश्किल यही लगती है कि पल्लू कौ न ठीक करेगा? कोई मेहमानआए, कोई चिंता नहीं। आप बैठी रहिए, काम सब होता रहेगा। क हीं जाना हो, शॉपिंग करनी हो, इनके बिना काम चलने वाला नहीं। बीच-बीच में तीखी-मीठी-खट्टी नोंक-झोंक न हो तो आनंद ही क्या? ऐसा होता है माँ-बेटी का प्यारा रिश्ता। घर में होती हैं तो पूरे घर को सिर पर उठाए रखती हैं, न हो तो सूनापन लगता है। इनकी चिड़ियों की तरह चूँ-चूँ चलती रहे, तभी खिला रहता है मन। माँ-बेटी कातो हर दिन "मदर्स डे" है। यूँ ही ये रिश्ता चल ता रहे, चलता रहे।

५२– अनमोल थाती

शब्दों के सिवा
नहीं कुछ पास मेरे
यही है मेरी अनमोल थाती,
जो धरोहर स्वरूप मिली मुझे
तुम्हारे नाना
यानी चैकड़ी पापा से
जिसे संभाले हुए हूँ
बड़े जतन से...!
निकालती हूँ बड़ी कृपणता से
थोड़े-थोड़े शब्द
गाहे-बगाहे
उपहर स्वरूप देने के लिये
तुम्हें और तुम्हारे भाई को...!!
भौतिकता में
नहीं रमता मन मेरा,
इसी से अपनी भावनायें
शब्दों में पहुँचाती हूँ...!!!
जब नहीं रहूँगी मैं
तब ये दीप बनेंगे
निराशा के क्षणों में
मार्गदर्शक बनेंगे
बिखरते क्षणों में मेरा प्यार बनेंगे....!!!!
जब भी याद करोगी मुझे
ये शब्द जैसे मेरा संबल बने
मेरे नैराश्य में
वही संबल तुम्हें भी मिले
इसीलिए संभाले रखना
मेरी ये अनमोल थाती!
मेरे ना रहने पर
सौंपना अपने सुमनों को
मेरी तरह सब बता कर......!!!!!

५३– खुशियों के इंद्रधनुष

मेरे अपने....मेरे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।इन सबके बिना जीवन का कोई अर्थ नहीं। माँ-पापा ने जन्म दिया, निस्वार्थ प्यार दिया, जीवन जीने की समझ दी, संस्कारित कर व्य क्तित्वका निर्माण किया। आज मैं जो कुछ भी हूँ उन्हीं के कारण हूँ। मेरी सासू माँ यानि अम्मा ज ी! जिनसे जीवनसाथी के रूप में पति मिले। इनका साथ जो मिला तो जीवन का हर सफ़र इत ना सुगम होतागया कि मुश्किलें भी जो आईं तो हमारे साथ के आगे ठहरने का साहस नहीं जुटा पाईं। दो प्यारे बच्चे हमारे.... देखते-देखते कब पढ़-लिख कर बड़े हो गए... पता ही न चला। क ल तक हम इन्हें देखते थेओर अब ये हमें देखने सिखाने वाले बन गए। माता-पिता के लिए ये स बसे बड़े गर्व की बात होती है जब बच्चे अपने मनचाहे कैरियर में सफलता प्राप्त करते हैं। बेटी भी देखते-देखते ससुराल वाली होगई तो दामाद के रूप में हमारे परिवार में एक स्नेह का सूत्र और जुड़ा। अब इतने अच्छे और प्यारे लोगों का साथ जब जीवन में है तो खुशियों के इंद्रधनुष तो खिलेंगे ही, मन के पंछी तो चहकेंगे ही न!

५४– शुभकामनाएँ
(बेटी के शब्दों में : भाई के लिए)

मेरे भाई!
जन्मदिन की बधाई!
खूब करो मेहनत
मेहनत रंग लाये
खुशियाँ हों संग
साथी मन भाये
माँ और पापा का आशीर्वाद
ताकत तुम्हें दिलाये
सपने तुम्हारे सब पूरे हो जायें
हम दो हमेशा ऐसे ही
साथ एक-दूसरे का निभायें
नोकझोंक, लड़ाई, मस्ती
ऐसे ही चलती जाये
जन्मदिन की बहुत बहुत
शुभकामनाएँ....!
मेरे प्यारे भाई.........!!!!!!
07 जुलाई 17

५५– तेरी हँसी

तेरी मुस्कराहट
दर्द के भँवर से
निकाल देगी मुझे
मुश्किलें
राह की यूँ
आसान कर देगी
मेरे लिए
कि खिलखिलाने लगेगी
जिंदगी
तेरी हँसी की तरह।
१५-०५-२०१८

५६– मित्रता दिवस पर
(अपनी बिटिया मित्र के लिए)
————————————————-

कल
यूँ ही
घूमते-घामते
मिल गयी
दोस्ती रास्ते में
पूछने लगी मुझसे
कैसी हो?
पहचाना नहीं क्या..?
मैंने कहा
यूँ तो न कहो
कम से कम
मिलती हो सदा तुम
गिनती के कुछ पल लेकर
जो मिलते ही
हो जाते उड़नछू
देखते ही देखते....
हँसी बड़ी जोर से
ठहाका लगा कर दोस्ती
बोली... बड़ी लालची हो गयी हो तुम
थोड़ा-थोड़ा जो मिलता है
अमृत बूँदों सा
वही तो संजीवनी
दे रहा हमको
इस थोड़े से को
पाने और देने के बीच
जो आनंद है
हमारे रिश्ते और दोस्ती में
जरा सोचो तो
कहीं और है भला....?
कह कर चली
फिर मिलती हूँ शीघ्र...
जब तक मैं
हाथ हिला कर ‘ बाय’ कहती

वो मुस्कुराती हुई
चली गयी
फिर जल्दी
आने के लिए......!!!
०५-०८-२०१८
————————–

५७– पिता की परी

——————————-

पिता के
मजबूत कंधों पर
बैठी पिता की परी
गर्व से भरी,
धरा पर
पिता के कदम
पर वो उड़ रही आसमान में,
कह रहा पिता
उसे धीरे-धीरे
सुन मेरी परी!
सारे काम तेरे
करती है तेरी माँ!
पर जब
वो थकेगी
उसके बाकी काम कर
उसके साथ
मैं तुझे घूमाऊँगा
कंधे पर बैठा
मेला दिखाने ले जाऊँगा
कर सके
तू असुरों से अपनी सुरक्षा
वो सुरक्षा के
गुर सिखाऊँगा
पर, इस दुनिया में
डर कर नहीं
जियेगी मेरी परी!
तेरे सपनों के लिए
तेरे हौसलों की
उड़ान बन जाऊँगा

———————————-

५८– तेरे कितने रूप!
——————————-
भेजती हूँ
ये पीले गुलाब
अपनी उस बेटी के लिए
जो मेरे लिए
बेटी से अधिक
मित्र है
या मित्र से अधिक
बेटी है
आज तक
समझ नहीं पाई मैं.....
कब वरदान सी मिली ये
मित्र, मार्गदर्शक
सहयोगी और भी न जाने
कितने विविध रूपों में
जीने लगती है मेरे साथ
पता ही नहीं चलता.....!!
तेरी-मेरी
मित्रता के लिए
ये पीले गुलाब
बनी रहे माँ-बेटी की मित्रता
हर युग-जन्म
हर काल में
कहने आए तुम्हें
ये पीले गुलाब......!!!!
————————————-
५९– बचपन के दिन
——————————-
बहन
अगर पहले
घर में आती है तो
बड़े होने पर पड़ोसियों के
छोटे लड़कों को
अपना भाई मान
गोद में उठाए घूमती हैं

अपना भाई कब मिलेगा
रोज माँ-पिता से पूछती हैं...!
मिल जाता है जब भाई
तो मनचाही बड़ी सी
राखी लाकर बाँधती है
पड़ोसियों के भाइयों को
तब भूल जाती है सदा के लिए...!!
बचपन भाई के साथ
हर दिन त्योहारों सा होता है
भाई उसका हिस्सा
जब चालाकी से
खा जाता तो रोती है
जब कुछ लाती तो
पहले भाई को देती है...!!!
भाई सदा बहनों को
अधिक प्यार करने की
शिकायत करते रहते हैं
बचपन में जो लड़ते
दो विरोधियों की तरह
बड़े होने पर वही भाई
कितने गम्भीर होते हैं
यह सोच कर
बहन जब ससुराल जाएगी
तब कैसे क्या होगा....!!!!
विवाह होने पर
बन जाता है भाई
बहन के बच्चों का प्यारा मामा
ससुराल में बहन की
ओढ़े रहता है गम्भीरता
पर जब आती है
बहन मायके तो उसके साथ
पुराने दिनों को जीता है
कभी उसके लिए
कुछ खाने को लता है
तो कभी मनपसंद
अपना बनवाता है

घुमाने, सिनेमा दिखाने
ले जाता है और सोचता है
अब जाएगी तो
जाने फिर कब आएगी....!!!!
अपने-अपने
परिवारों में रम कर भी
भाई जब भी
मिलते हैं बहनों से
तो यही कहते हैं
वो अपने बचपन के दिन
कितने प्यारे थे....!!!!!!
——————————————-

६०– तुम!
____

तुम
हँसती हो
खिल उठते हैं गुलमोहर
पेड़ों पे
तुम
बोलती हो
बिखर जाते हैं फूल
राहों में
तुम
धीमे से
कहती हो कानों में
चहचहा कर उड़ जाते हैं परिंदे
आसमान में
तुम
देखती हो
सब कह उठते हैं
हैप्पी बर्थडे प्यारी, चुलबुली कुक्की!

———————————————-

६१–तेरे बिना
———————-
तेरे बिना
एक पल भी
लगता एक-एक साल,
कहने को
मन में बहुत कुछ
कहे बिना
माँ है बस बेहाल,
प्रश्न स्वयं से
और उत्तर भी
स्वयं ही देती हूँ
कभी भयावह सोच से
मन ही मन डरती हूँ,
आना बिटिया मेरी जल्दी
बीतता नहीं समय
हो सकता
बन जाऊँ कहानी
कहता कभी समय।
२५-०३-१९
———————————

व्यक्तित्व दर्पण

नाम	- डॉ.भारती वर्मा बौड़ाई
माँ	- श्रीमती कमला वर्मा
पिता	- बाबूराम वर्मा
जन्म स्थान	- देहरादून (उत्तराखण्ड)
जन्मतिथि	- 04 अक्टूबर 1957
शैक्षिक योग्यता	- एम.ए. (हिन्दी साहित्य), बी.एड., डी.फिल.(शोध द्वारा - गद्यकार बच्चन : एक आलोचनात्मक अध्ययन)
जीवन संगी	- श्री राकेश आनंद बौड़ाई
संतान	- दो (एक आत्मजा, एक आत्मज)
व्यवसाय	- 24 वर्ष तक अरुणाचल प्रदेश के शिक्षा विभाग में अध्यापन। अक्टूबर 2005 मे स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ली।
संप्रति	- स्वतंत्र अध्ययन और लेखन
निवास स्थान	- ''प्राच्य शिखर'' 95, दिव्य विहार, डांडा धर्मपुर, डाकघर - नेहरुग्राम, देहरादुन उत्तराखण्ड, पिन - 248001
फोन नं.	- 9759252537
मेल आई.डी.	- bharati.bourai007@gmail.com
प्रकाशित एकल पुस्तकें	- (1) कविता का अरुणांचल (कविता संग्रह) 1985 (2) बच्चन साहित्य : अध्ययन का उपक्रम (आलोचना) 1998 (3) सृजन समीक्षा 2018, (4) उपहार (काव्य संग्रह), (5) रंगों के साथ (काव्य संग्रह) (6) अंतर्मन की यात्राएँ (काव्य संग्रह), (7) आखर मीत (काव्य संग्रह) (8) अनुभूतियों के दंश (लघुकथा संग्रह) (9) पगडंडियों पर चलते हुए (लघुकथा संग्रह) (10) कुछ रंग धूप के (आलेख संग्रह)
प्रकाशित साक्षा संग्रह	- 45 साझा संग्रहों में रचनाएँ प्रकाशित
पत्र पत्रिकाएं	- लगभग 70 पत्र-पत्रिकाओं, ई पत्रिका, ब्लॉग में रचनाएँ प्रकाशित
सम्मान	- वाणिज्य मंत्री (वर्तमान रक्षा मंत्री) निर्मला सीतारमण सहित विभिन्न संस्थाओं, प्रकाशनों द्वारा लगभग 28 सम्मानों से सम्मानित, अंतरा शब्द शक्ति सम्मान 2019 ।
सामाजिक क्षेत्र	- अपने पति के ''अविराम प्रवाह ट्रस्ट'' द्वारा किए जा रहे सेवा कार्यो में सहयोग।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-5372-024-7
मूल्य- 135/-